श्री वैभव लक्ष्मी
व्रतकथा

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

सरल, शुद्ध, सच्चा और शास्त्रीय
विधि-विधान से करने वाला सम्पूर्ण फलदायी व्रत
असली स्वरूप का

श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा

व्रत करने की शास्त्रीय विधि, उद्यापन करने की सम्पूर्ण विधि, व्रत में मानने व पालन करने के नियम, व्रत का मनोरथ पूरा न हो तो उसका समाधान, श्री लक्ष्मी महिमा, श्री वैभव लक्ष्मी माँ के चमत्कार की कथाएँ श्री यन्त्र, श्री लक्ष्मी जी की आठों स्वरूपों की छवियाँ, आरती, स्तुति, चालीसा का एकमात्र सम्पूर्ण सच्चा प्राचीन और तुरन्त फल देने वाली व्रत कथा

निवेदक : पं. नरेन्द्र शर्मा

प्रकाशक :

लक्ष्मी प्रकाशन

4734, प्रथम मजिंल, बल्लीमारान, दिल्ली-6

☎ 23974978, 23917707 मूल्य : दस रुपये

निवेदन : यदि किसी भाई-बहन को पुस्तक मिलने में असुविधा हो तो प्रकाशक को पत्र लिखकर वी.पी. पैकेट द्वारा मँगा सकते हैं। डाक खर्च निःशुल्क। कृपया पाँच प्रतियों से अधिक का ही आदेश दें।

धन प्राप्ति, पारिवारिक सुख, मन
की शांति के लिए एकमात्र व्रत

श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा!

माँ वैभव लक्ष्मी का व्रत जो भी सच्चे और शुद्ध मन से रखेगा, उस व्रत के साथ इस व्रत कथा का पाठ करेगा और लोगों को भी सुनाएगा, उस पर माँ लक्ष्मी की कृपा अवश्य होगी और उसे मन चाहा फल मिलेगा।

इस पुस्तक के पाठ द्वारा आपके भाग्य में परिवर्तन होगा। परंतु इसके लिए हर प्राणी को व्रत करने की शास्त्रीय विधि एवं व्रत कथा का पाठ ठीक नियमानुसार करना होगा। व्रत करने के साथ एकमात्र यही एक कथा है जो आपके लिए धन के खजाने खोल सकती है।

✍ पं. नरेन्द्र शर्मा

खरीदने से पूर्व पुस्तक पर छपा लक्ष्मी प्रकाशन, दिल्ली का नाम अवश्य पढ़ लें।

यह व्रत शीघ्र श्रीफल देने वाला है। किन्तु फल न दे तो तीन माह के बाद फिर से यह व्रत शुरु करना चाहिये और जब तक मनवांछित फल न मिले तब तक यह व्रत तीन-तीन महीने पर करते रहना चाहिए। तो कभी भी इसका फल अवश्य मिलता ही है।

व्रत कथा प्रारंभ करने से पहले की विधि

1. 'श्री यंत्र' को सामने रखकर 'श्री यंत्र' को नमस्कार ऐसा बोलकार 'श्री यंत्र' को नमस्कार करें। इस पुस्तक में 'श्री यंत्र' की फोटो दी गई है।

2. बाद में लक्ष्मी जी के नीचे दिये गये आठों स्वरूपों की छवियों को प्रणाम करें—(1) धन लक्ष्मी, (यह पुस्तक के मध्य गें चतुरंगी छवि दी है।) (2) श्री गजलक्ष्मी माँ, (3) श्री अधिलक्ष्मी माँ, (4) श्री विजय लक्ष्मी माँ, (5) श्री ऐश्वर्य लक्ष्मी माँ, (6) श्री वीरलक्ष्मी माँ, (7) श्री धान्यलक्ष्मी माँ, (8) श्री सन्तान लक्ष्मी माँ।

3. बाद में नीचे दिया हुआ 'लक्ष्मी स्तवन' का पाठ करें।

गहने की पूजा करते समय निम्न लिखित श्लोक का उच्चारण करें—

श्लोक

या रक्ताम्बुजवासिनी विलसिनी चण्डांशु तेजस्विनी।
या रक्ता रुधिराम्बरा हरिसखी या श्री मनोल्हादिनी॥
या रत्नाकरमन्थनात्प्रगटिता विष्णोस्वया गेहिनी।
सा मां पातु मनोरमा भगवती लक्ष्मीश्च पदमावती।

लक्ष्मी स्तवन का हिन्दी में भावार्थ : जो लाल कमल के फूल में विराजमान हैं, जो अतुलनिय कांतिवाली हैं, जो महान तेजवाली हैं, जो समस्त लाल वर्ण हैं, जिसने लाल वस्त्र पहने हैं, जो भगवान विष्णु की पत्नी हैं, जो माँ लक्ष्मी सबके मन को आनंद देती हैं, जो समुद्रमंथन के समय सागर से प्रकट हुई थीं, जो विष्णु भगवान को प्रिय हैं, जो कमल में विराजित हैं और जो अतिशय पूजनीय हैं, हे लक्ष्मी माँ! आप मेरी रक्षा करें।

माँ लक्ष्मी व्रत फल की कथा

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम
इष्टकाम समृद्धयर्थ पुनरागमनाय च॥

हे गज लक्ष्मी मां! जगत कल्याण करने वाली, सब की झोलियां भरने वाली, मेरा भी कल्याण करना।

हे अधि लक्ष्मी मां! जगत कल्याण करने वाली, सब की झोलियां भरने वाली, मेरा भी कल्याण करना।

हे विजय लक्ष्मी मां! जगत कल्याण करने वाली, सब की झोलियां भरने वाली, मेरा भी कल्याण करना।

हे ऐश्वर्य लक्ष्मी मां! जगत कल्याण करने वाली, सब की झोलियां भरने वाली, मेरा भी कल्याण करना।

हे वीर लक्ष्मी मां! जगत कल्याण करने वाली, सब की झोलियां भरने वाली, मेरा भी कल्याण करना।

हे धान्य लक्ष्मी मां! जगत कल्याण करने वाली, सब की झोलियां भरने वाली, मेरा भी कल्याण करना।

हे सन्तान लक्ष्मी मां! जगत कल्याण करने वाली, सब की झोलियाँ भरने वाली, मेरा भी कल्याण करना।

व्रत रखने के नियम

अल्कूती, मंयाजन्तु, सर्वो भवति पूजित।
निर्धन, शिवतुल्योऽपि सर्वैरप्यभिभूयते॥

ब्रह्मपुराण

माँ लक्ष्मी कहती हैं कि : मेरे द्वारा अलंकृत प्राणी सबसे अधिक पूज्य होता है, किंतु यदि निर्धन प्राणी भले ही शिवजी के समान ही क्यों न हो, सर्वत्र तिरस्कार का भागी होता है।

तो आप स्वयं ही कल्पना करें कि बिना लक्ष्मी (धन) के आपका जीवन क्या है? यही शून्य।

संसार में अनेक पदार्थ बिखरे पड़े हैं किंतु बिना धन के तो आप कुछ भी नहीं पा सकते, आपकी हर इच्छा अधूरी ही रहेगी। हर भावना तड़पती रहेगी।

ऐसे में आपको सर्वप्रथम धन को प्राप्त करना है। धन प्राप्ति का अर्थ माँ लक्ष्मी को पाना। मगर कैसे प्राप्त होगा धन?

यही प्रश्न बार-बार हमारे सामने आता है। माँ लक्ष्मी की प्राप्ति की इच्छा रखने वाले प्राणी सोचते हैं कि धन कैसे प्राप्त हो?

क्या चोरी, डकैती, हेरा-फेरी, बेईमानी से धन कमाया जाए?

नहीं... नहीं... नहीं यह तो अधर्म है। यह महापाप है। ऐसे धन को लक्ष्मी तो नहीं, कलंक कहा जा सकता है,

मलेच्छ कहा जा सकता है। पाप की कमाई को लक्ष्मी जी का नाम नहीं दिया जा सकता। यह कमाई अथवा ऐसा धन आपको पथ भ्रष्ट कर देगा। आपके मन की शांति भंग कर देगा। आपकी संतान बिगड़ सकती है। संसार के अनेक कष्ट आपको घेर सकते हैं।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए साधना की आवश्यकता है, तप और त्याग की आवश्यकता है, लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिये सबसे पहले व्रत रखें। इस व्रत को रखने के लिये हमारे धार्मिक गुरुओं ने कुछ नियम बना रखे हैं, जो इस प्रकार हैं—

1. इस व्रत को यदि नारी करे तो इसका फल अधिक मिलता है।
2. यदि किसी कारणवश नारी यह व्रत नहीं कर सकती तो फिर पुरुष इस व्रत को कर सकते हैं।
3. यदि विवाहित प्राणी है, तो पति-पत्नी दोनों मिलकर इस व्रत को रखें तो इससे माँ लक्ष्मी अति प्रसन्न होती हैं।
4. व्रत रखने के लिए पहले अपने मन और विचारों को शुद्ध करें। किसी प्रकार का छल-कपट, पाप मन में नहीं आने दें।
5. व्रत करते समय यह स्वार्थ मन में न रखें कि मुझे धन प्राप्त करना है। बल्कि यह सोचकर व्रत रखें कि मुझे माँ लक्ष्मी को प्रसन्न करना है।

6. माँ लक्ष्मी के अनेक रूप हैं जो इस पुस्तक के आरंभ में ही चित्रों के रूप में दिए गए हैं। परंतु भक्तों की सुविधा के लिए— 'श्री यंत्र' को ही यदि आप प्रणाम करते हैं तो समझ लो माँ लक्ष्मी के हर स्वरूप को आपने प्रणाम कर दिया। 'श्री यंत्र' भी इस पुस्तक के आरंभ में दिया गया है।
7. माँ लक्ष्मी का व्रत शुक्रवार के दिन रखना चाहिए।
8. यदि किसी कारणवश किसी शुक्रवार आप यह व्रत नहीं कर सकते तो इसके स्थान पर अगले शुक्रवार को यह व्रत करके माँ लक्ष्मी से क्षमा माँगें।
9. व्रत पूजन के समय सोने की कोई चीज़ पूजा के लिए रखें। यदि घर में सोना न हो तो इसके स्थान पर चाँदी भी रखी जा सकती है।
10. रजस्वला नारियाँ उन दिनों में शुक्रवार छोड़ सकती हैं।
11. माँ लक्ष्मी के लिए 21, 31, 51, 101 व्रत अपनी श्रद्धा के अनुसार रख सकते हैं।
12. व्रत सम्पूर्ण हो जाने पर सात कन्याओं को अच्छे से अच्छा भोजन लक्ष्मी पूजन करने के पश्चात् खिलाएँ।
13. हर व्रत संपूर्ण होने पर माँ वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की 11, 21, 31, 51, 101 अथवा इससे अधिक पुस्तकें अपने मित्रों-सम्बन्धियों व सत्सगों में अवश्य बाटें।
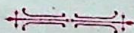
जय माँ लक्ष्मी : अब कथा प्रारंभ होती है

एक बड़ा शहर था। इस शहर में न जाने कितने ही लोग रहते थे। देश के कोने-कोने से रोज़गार की तलाश में आए लोग जब इस शहर में आते थे तो उनके पास कुछ भी तो नहीं होता था। उनकी एकमात्र यही इच्छा रहती थी कि उनको किसी तरह से भी दो समय की रोटी मिल जाए। मेहनत, मजदूरी करके अपने बच्चों का पेट पाल लें, बस प्रभु के गुण गाएँ।

वैसे तो देखा जाए तो मानव की इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती। शुरू में वह यही सोचता है कि उसे दो समय की रोटी मिल जाए। प्रभु की यही सब से बड़ी कृपा होगी। इसी के लिए वह मंदिरों में जाते हैं। तीर्थयात्रा करते हैं। कथा सुनते हैं।

और जब उन्हें दो समय की रोटी मिलने लगती है तो उनके मन में कुछ और विचार उठने लगते हैं जैसे— उनकी आय बढ़े, उनके पास धन हो, रहने के लिए बढ़िया मकान हो, पहनने के लिए अच्छे कपड़े हों, सवारी के लिए कार हो या स्कूटर ही हो।

बस रोटी मिलने के पश्चात् उनकी लालसा बढ़ती जाती है। किसी ने ठीक ही कहा है। भूख की एक सीमा है जिसे खाना खाते ही पूरा कर लिया जाता है। परंतु लालसा की तो कोई सीमा नहीं। मानव जीवन की भी एक सीमा है। लाखों करोड़ों के सपने, सुख, शांति और मौज-मस्ती की आशाओं की लालसा करने वाला इन्सान यह भूल जाता है कि यह द्वार उसे मृत्यु की ओर लिए जा रहा है।

मानव जीवन इतना बड़ा कहाँ है, जिस पर हम भविष्य का इतना बड़ा बोझ लाद देते हैं। हम काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं

अहंकार में अंधे होकर उस प्रभु, उस महाशक्ति को भी भूल जाते हैं, जिसने इस संसार को जन्म दिया है, जो जीवन देता है और वही मृत्यु भी देता है। कलयुग में तो ऐसा ही होता है। पाप की परछाईयाँ लंबी और गहरी होना शुरू हो जाती हैं। धर्म व्यापार बन जाता है। अधर्मी खूब फलते-फूलते हैं।

इस बड़े शहर में तो धर्म कम और अधर्म अधिक था। इसी शहर के एक मोहल्ले में राधा और गोपाल पति-पत्नी के रूप में रहते थे। उनका छोटा-सा घर था। यानी घर के नाम पर एक कमरा था। उसी में रसोई, उसी में सोना, उसी में खाना-पीना। यही था उनका घर। गोपाल किसी मिल में नौकरी करता था। राधा घर का सारा काम-काज करती थी। उसने अपने छोटे से घर को भी इतना साफ सुथरा और सजा रखा था कि मोहल्ले की औरतें भी अकसर कहती थीं—'घर की सफाई रखना तो हमारी राधा बहन से सीखें।'

यह बात तो राधा भी जानती थी कि इस शहर में अच्छे लोग कम और बुरे अधिक हैं। उसी के अड़ोस-पड़ोस में कुछ औरतें ऐसी थीं, जो दिन भर एक दूसरे की चुगलियाँ करती रहती थीं। दूसरों के घरों में ताक-झाँककर उनकी बुराइयाँ ढूँढ़ना तो उनका सबसे पहला काम था। अपने घर की भले ही उनको कोई खबर न हो, मगर पूरे मोहल्ले की खबर तो उनके पास यूँ रहती थी जैसे मोहल्ले की डायरी लिखने का काम प्रभु ने उन्हें सौंप रखा हो।

राधा को उनकी यह बातें पसंद नहीं थीं। पहले तो उसे घर के काम-काज से ही समय नहीं मिल पाता था। दूसरा पति की

सेवा करना उसका धर्म था। पति की लम्बी आयु और उन्नति के लिए ईश्वर की उपासना करती। हर मंगलवार को महावीरजी का व्रत अपने पति की चिर आयु के लिए रखती।

मोहल्ले की चुगलखोर औरतों को राधा की अच्छी आदतें कैसे पसंद आ सकती थीं। वे तो यह कहने लगी थीं कि राधा में बड़ी अकड़ है, जो किसी से बात करना पसंद नहीं करती। शायद इसलिए न कि वह बड़ी सुंदर है। उसे अपनी सुंदरता पर बड़ा गर्व है। उसे यह नहीं पता कि जिस मोहल्ले में रहते हैं, वहाँ सबसे मित्रता करते हैं। उनके साथ मिलकर बैठते हैं। यदि वह ही किसी के पास दुःख-सुख बाँटने नहीं जाएगी तो कल को इसके पास कौन आएगा।

इन सबकी बड़ी बहन राम भजनी थी जो पूरे मोहल्ले को अपनी अंगुलियों पर नचाती थी। बहन राम भजनी ने अपनी ही एक कीर्तन मंडली बना रखी थी, जो घर-घर में जाकर कीर्तन करती थी। राधा को ऐसी औरतें बिलकुल पसंद नहीं थीं, जो कीर्तन करते समय भी एक दूसरे की चुगलियाँ करती हों। यही कारण था कि राधा ने कई बार उनको टोकते हुए कह दिया था—'देखो बहन राम भजनी, वैसे तो आपका नाम है राम भजनी, मगर मैं आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हूँ कि पूजा एवं कीर्तन करते समय किसी की चुगली मत किया करो, किसी की बुराई करने से तो अच्छा है आप उस समय में प्रभु का नाम लें। इससे आपका जीवन भी सफल होगा और बुराई से बच जाओगी।'

राधा की इतनी बात सुनते ही बहन राम भजनी को क्रोध आ

गया। क्रोध के मारे उसके चेहरे का रंग लाल हो गया। वह कड़ककर बोली, ''ओ कल की छोकरी, क्या तू मुझे बताएगी कि मुझे क्या करना है? अभी शहर में आए दो साल हुए हैं। गाँव का गोबर अभी हाथों से उतरा नहीं और हम शहर वालों को अक्ल सिखाने लगी है। गँवार कहीं की।''

देखो बहन, मैं गँवार हूँ या कुछ और, मैं प्रभु भक्ति में पूरा विश्वास रखती हूँ। मैं यह अच्छी तरह जानती हूँ कि भक्ति में ही शक्ति है। भक्ति ढोलकियाँ, चिमटे बजाने से नहीं होती, बल्कि सत्य के पथ पर चलने से होती है। ईश्वर का यही सिद्धांत है, यही शिक्षा है कि 'किसी का बुरा मत करो. मैं तो हर जीवात्मा में रहता हूँ। तुम मेरी तलाश में क्यों बाहर भटक रहे हो। यदि तुम सत्य और विश्वास का सहारा लेकर अपनी आत्मा में मुझे तलाश करोगे तो मैं तुम्हें अवश्य मिलूँगा।'

इस बात को सुनकर वह राम भजनी और उसकी साथी सब मिलकर राधा का मज़ाक उड़ाने लगी थीं। राधा जानती थी, ये लोग पाप करने वाले हैं। इनकी पूजा तो केवल ढोंग है, दिखावा है, इनके मन काले हैं, खोटे हैं। इनसे अधिक बोलने का कोई लाभ नहीं। इनकी कीर्तन मंडली खूब धन कमा लेती है। ईश्वर के नाम पर व्यापार, दुर्गा के नाम पर लूट ...छी...छी...छी...घिन होनें लगी थी राधा को इन सबसे। उसने अपने घर में पूजा पाठ करना शुरू कर दिया। इन लोगों से दूर रहने लगी।

उधर गोपाल बुरी संगत में पड़कर शराब पीने लगा, जुआ खेलने लगा। गाँव से आया सीधा-सादा गोपाल शहर के साथियों में ऐसा फँसा कि उसे यह बुरी आदतें लग गई। शुरू-शुरू में

उसने अपने आपको बहुत बचाने का प्रयास किया लेकिन जब चारों ओर ही आग लगी हो, वह कब तक बच सकता था।

एक मजदूर का वेतन ही कितना होता है। सारा मास मेहनत करने पर जो कुछ उन्हें मिलता था, उससे घर की दो समय की रोटी ही चल सकती थी। मकान का किराया, दुनियादारी, कपड़े-लत्ते। यह सब कुछ उस वेतन से ही तो चलता था। लेकिन जब इस वेतन से शराब पी जाए, चरस, गाँजा पिया जाए, जुआ खेला जाए तो घर कैसे चलेगा?

राधा बेचारी बहुत दुःखी हो गई। अंदर ही अंदर घुलने लगी। पति को मना करती तो उल्टी उसे मार पड़ती। गालियाँ सुनने को मिलतीं। घर में आकर वह इतना हाय-हल्ला करता कि लोगों को उनका मज़ाक उड़ाने का मौका मिलता।

वह अंदर-अंदर टूटने लगी। हर समय उदास रहने लगी। अपने मन की आग को शांत करने के लिए आँसू बहाती रहती। इस परदेश में उसका कौन था, जो उसे सहरा देता।

वह तो अकेली पड़ गई थी। आ-जाकर उसे प्रभु का ही आसरा था। माँ दुर्गा ही उसे सहारा देगी। माँ लक्ष्मी तो इस घर से रूठ ही चुकी थी। गोपाल ने घर के बर्तन तक बेच डाले थे। इतने बड़े संकट में भी उसने प्रभु पर विश्वास नहीं छोड़ा। माँ दुर्गा की उपासना नहीं छोड़ी। उसे पूर्ण विश्वास था कि एक दिन माँ उसके सारे संकट दूर करेगी।

एक दिन जब घर में खाने को कुछ नहीं बचा था। वह दो दिन से भूखी थी। जिस दुकान से खाने-पीने का सामान उधार मिलता था, उसने इसलिए उधार देने से मना कर दिया क्योंकि

उसके पिछले रुपए ही नहीं दिए गए थे। इस युग में तो जिसके पास लक्ष्मी नहीं वह भूखा मर जाएगा।

राधा, माँ लक्ष्मी के चित्र के आगे हाथ जोड़े बैठी रो रही थी। माँ ने उसकी आँखों से टपकते आँसू देख लिए थे। उसके हृदय के दुःख जान लिए थे। राधा रोए जा रही थी। साथ में वह माँ लक्ष्मी का पूजन भी कर रही थी।

माँ लक्ष्मी··· मुझे बचा लो माँ··· मुझे बचा लो··· देखो मेरे घर की क्या हालत हो गई है··· मैं दो दिन से भूखी हूँ··· मेरा पति बिगड़ चुका है··· घर में लक्ष्मी जी आप बैठी हैं परन्तु··· आपका दूसरा स्वरूप जो इस संसार में माया का है वह इस घर में नहीं है। उसके बिना जीवन नहीं··· माँ··· मुझे बचा लो माँ···

मुझे बचा लो माँ···

मुझे बचा लो···

माँ शक्ति दो··· शक्ति दो माँ···

माँ लक्ष्मी··· कृपा करो··· इस घर को बचा लो माँ अब आप ही मेरा अंतिम आसरा हो···

तुमने मुझे न बचाया तो मैं तुम्हारे चरणों में ही जान दे दूँगी। अब तो मेरा यह अंतिम निर्णय है··· यह कहती हुई राधा माँ लक्ष्मी के चित्र के आगे गिर गई···

उसी समय घंटियाँ बजने लगीं। शंख की आवाज़ आने लगी। राधा के उदास चेहरे पर अपने आप खुशी की लहर दौड़ गई। तभी उसके कानों में आवाज़ आई, "बेटी राधा! तुम्हारी। आराधना सफल हो गई है। तुमने इतने बड़े संकट में भी मुझ पर विश्वास नहीं छोड़ा। अपनी श्रृद्धा में कमी नहीं आने दी। इसलिए

मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ।''

राधा एक तो तू पतिव्रता धर्म में पूरी उतरी है, अपने पति की सेवा में कोई कमी नहीं रखी।

दूसरा, तूने मुझ पर विश्वास नहीं छोड़ा। यह सब तेरी अग्नि-परीक्षा ही थी। जिस में तू पूरी उतरी है।

हे जगत माता! मैंने आपसे आज तक कुछ नहीं माँगा। परंतु आज मैं मजबूर हो गई हूँ माँ···आज पहली बार आपसे इस घर की खुशियाँ माँग रही हूँ, माँ···मुझे धनवान बनने की कोई लालसा नहीं···मुझे तो जीने के लिए धन की जरूरत है जिससे हम खाना खा सकें···मेरे बिगड़े हुए पति को सुधार दो माँ···

जाओ बेटी···अपने को सँभालो! मैं तुम्हारी मनोकामना पूरी करने के द्वार खोल रही हूँ। उठो! अपने घर के द्वार खोलो।

राधा के अंदर न जाने कहाँ से अनजानी शक्ति आ गई थी। वह माँ लक्ष्मी के चरणों से उठकर अपने घर के द्वार की ओर गई तो सामने ही एक तिलकधारी ब्राह्मण को खड़े पाया।

बेटी राधा···जय माँ लक्ष्मी जी बोलो!

जय माँ लक्ष्मी···राधा ने पूरी शक्ति से कहा।

देखो बेटी! मैं माँ लक्ष्मी जी के मंदिर का पुजारी हूँ। माँ के आशीर्वाद से यह दो बोरी आटा और साथ में दालें और घी यह सब खाने की सामग्री आपके घर पहुँचाने के आदेश हुए हैं।

आप धन्य हैं महाराज···आप धन्य हैं···माँ लक्ष्मी के पुजारी होने के नाते मैं आपके चरण छूती हूँ महाराज और आप से यह प्रार्थना करती हूँ कि मुझे इस संकट से निकालने का उपाय भी बताओ।

देखो बेटी! इस माया रूप संसार में सुख प्राप्त करने के लिए अपने मन को शुद्ध और आत्मा को पवित्र रखना पड़ता है। माया (लक्ष्मी) जी को तिजोरियों में बंद रखने वाले पापी होते हैं। यदि तुम अपने मन की शांति और घर-गृहस्थी चलाने के लिए लक्ष्मी जी को प्राप्त करना चाहती हो तो...

वैभव लक्ष्मी माँ का व्रत करो...

इस व्रत के करने से आपकी हर मनोकामना पूरी होगी। तुम्हारे सारे संकट दूर हो जाएंगे।

लेकिन पुजारी जी! मुझे इस व्रत की विधि तो बता दो। मैं तो माँ की उपासना बचपन से कर रही हूँ किंतु व्रत की विधि मुझे नहीं पता।

देखो बेटी! लक्ष्मी जी का व्रत बहुत सरल है। इसे वैभव लक्ष्मी व्रत कहा जाता है। जो प्राणी सच्चे मन से इस व्रत को कर लेता है उसकी सारी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं। उसे हर प्रकार के सुख, संपत्ति प्राप्त होती है। इस व्रत को विधिपूर्वक करने से ही इसका फल मिलता है। जो लोग इस व्रत को विधिपूर्वक नहीं करते उन्हें कोई फल तो नहीं मिलता बल्कि वे अपने मन की शांति खो बैठते हैं।

कई पाखंडी और धोखेबाज यह कहते फिरते हैं कि सोने के गहने की हल्दी, कमकुम से पूजा करो, बस व्रत हो गया। परंतु ऐसा है नहीं। कोई भी व्रत जब तक अपनी विधि अनुसार नहीं किया जाता, उसका फल शून्य ही तो मिलेगा। यह सब कुछ भी अपने आप पर निर्भर करता है। वैसे घर में यदि सोना हो तो व्रत रखकर उसकी उपासना जरूर करें।

माँ लक्ष्मी जी का व्रत शुक्रवार को रखना चाहिए। सुबह उठकर नहा-धोकर साफ-सुथरे कपड़े पहनें और दिन भर माँ का पूजन करें। हर समय मुँह से यही शब्द निकालें।

जय लक्ष्मी माँ!

जय लक्ष्मी माँ!

शाम के समय पूर्व दिशा की ओर मुँह करके आसन पर बैठें और माँ लक्ष्मी जी की मूर्ति या चित्र किसी ऊँचे स्थान पर रख उसके आगे चावलों की ढ़ेरी लगाएँ। एक खुली प्लेट में सोने के जेवर रखें। यदि सोने के जेवर न हों तो चाँदी से भी काम चलेगा। माँ लक्ष्मी के चरणों में गुलाब के सुर्ख फूल अर्पण करके धूप के साथ-साथ देसी घी की ज्योति जलाएँ।

वैसे तो माँ लक्ष्मी के अनेक रूप हैं, परंतु इन सबकी नींव 'श्री यंत्र' है, जो माँ के भक्त 'श्री यंत्र' के दर्शन कर लेते हैं, समझ लो उन्होंने माँ के हर रूप के दर्शन कर लिए। इसलिए माँ पूजन के समय 'श्री यंत्र' को मत भूलें।

सबसे पहले प्लेट में रखे जेवर को हल्दी का टीका लगा कर पाँच बार बोलें, जय माँ वैभव लक्ष्मी…जय माँ वैभव लक्ष्मी…हमारी खाली झोली भर दो माँ…हमारी खाली झोली भर दो…

इसके पश्चात् घी, आटे और चीनी को भूनकर बनाया गया प्रसाद, जिसमें केले के टुकड़े काटे हों, माँ लक्ष्मी की आरती करके उस प्रसाद को लोगों में बाँट दें। बाँटते समय भी आप की जबान पर माता लक्ष्मी की जय जरूर रहनी चाहिए।

यह व्रत निरंतर इक्कीस या इक्यावन रखे जा सकते हैं।

सूर्यास्त होने के पश्चात् माँ की उपासना करके जब प्रसाद बाँट लें तो आप भी भोजन ग्रहण कर सकते हैं। माँ के आगे पड़े चावलों को सब पक्षियों को डाल दें।

व्रत रखने वाले हर भक्त के लिए यह जरूरी है कि वह श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा का पाठ करे और लोगों को भी कथा सुनाए। इससे और अधिक पुण्य मिलता है।

यह सारे व्रत जब विधिपूर्वक पूरे हो जाएँ तो इसके फलस्वरूप प्राणी की हर इच्छा पूरी हो जाती है। माँ लक्ष्मी स्वयं उनका कल्याण करती हैं। उनके घर में सुख ही सुख मिलते हैं। धन तो आता ही है, परंतु जिनके घर में संतान न हो, उनके लिए यह व्रत वरदान से कम नहीं।

जब व्रत सम्पूर्ण हो रहे हों अर्थात् इक्कीसवाँ या इक्यावनवाँ व्रत जब रखें तो उस दिन सात छोटी बच्चियों को घर पर बुलाकर उन्हें उनका मन पसंद भोजन खिलाएँ। फिर कन्या को चाँदी का अथवा गिलट का एक-एक सिक्का (रुपए का) दक्षिणा में दें।

उसी दिन माँ लक्ष्मी की 'श्रीवैभव लक्ष्मी व्रत कथा' की एक सौ एक या इक्यावन प्रतियाँ माँ भक्तों को अपने हाथों से बाँटें। यदि इतनी प्रतियों की शक्ति न हो तो ग्यारह तो अवश्य बाँटनी चाहिएँ। माँ की प्रतिमा के आगे बैठ दोनों हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना करते हुए कहें—

हे माँ लक्ष्मी, आपकी और प्रभु की कृपा से मैंने अपने व्रत विधिपूर्वक पूरे कर लिए हैं, इसलिए हे माँ! आप हमारी इच्छा पूरी करो। हमारी मनोकामना पूरी कर दो माँ!

हमें सदा सुखी रखना, हमारे परिवार को सुख देना माँ··
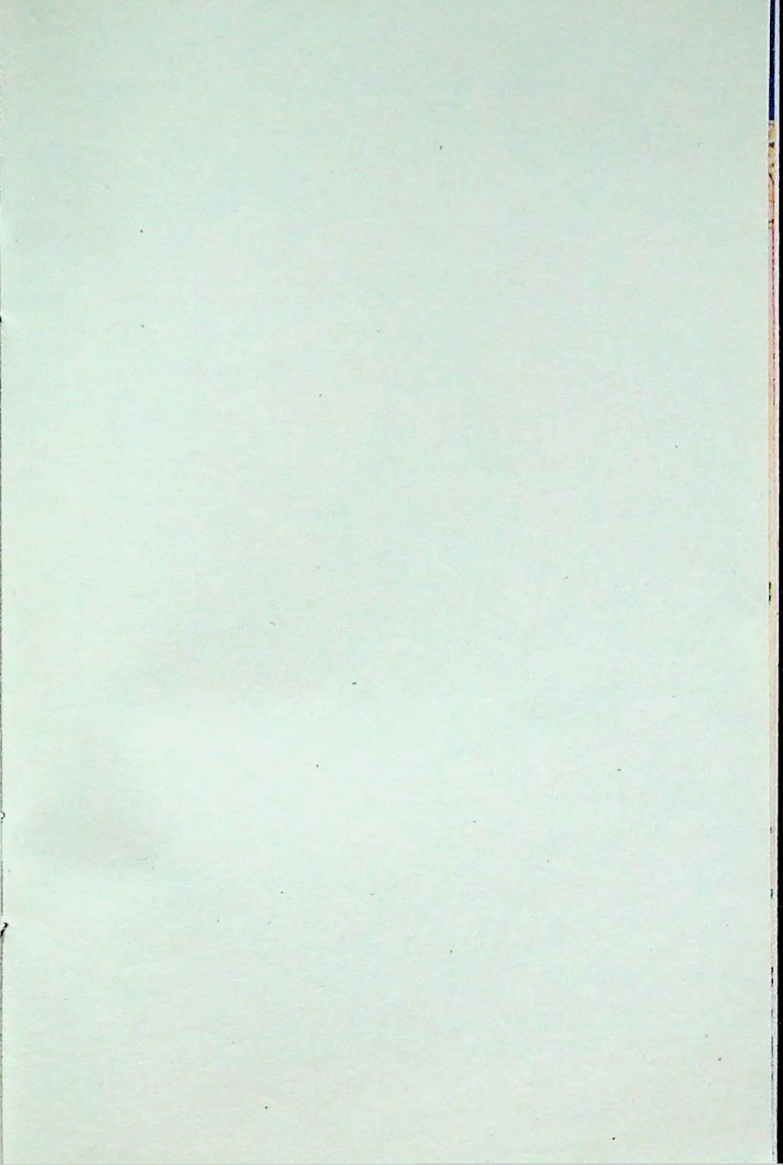
हे वैभव लक्ष्मी मां! हमारी सभी मनोकामना पूरी करें! समस्त प्राणियों का कल्याण करें मैं सपरिवार आपकी शरण में हूँ।

मां लक्ष्मी को प्रसन्न करने वाला अद्भुत् चमत्कारिक सुख, संपत्ति और शांति देने वाला सर्व सिद्धि दायक

श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा शुरू करने से पहले इस 'श्री यंत्र' को प्रणाम करके माथा टेकना चाहिए

बस बेटी यही हर प्राणी के लिए कल्याण मार्ग है। तुम भी श्री वैभव लक्ष्मी व्रत करो। तुम्हारा पति भी ठीक हो जाएगा और तुम्हें धन भी मिलेगा। तुम सदा कष्ट मुक्त रहोगी। यह कहते हुए पुजारी जी तो चले गए।

राधा ने आटे की बोरियाँ पड़ौसन की सहायता से अंदर रखवा दीं। दालों को भी अंदर रखा। माँ लक्ष्मी की उपासना तो कर ही रही थी। परंतु विधि अनुसार नहीं कर पाती थी। आज माँ लक्ष्मी ने उसकी हालत देखकर जो उसकी सहायता की है, उसे वह कैसे भूल सकेगी। सहसा उसे ध्यान आया, कल ही शुक्रवार है, मैं कल से ही माँ लक्ष्मी जी के इक्कीस व्रत आरंभ करूँगी...

दूसरे ही दिन से राधा ने शुक्रवार की वृत कथा आरंभ कर दी और साथ ही माँ का व्रत रखा। सारा दिन माँ की आरती करती रही। फिर उसने रात्रि के समय श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा का पाठ करके घर आए पति के चरण छूकर उसे प्रसाद खिलाया तो उसके पति ने उसे प्यार से सीने से लगाकर कहा—

मेरी राधा, तुम तो सचमुच देवी ही लग रही हो। मैं ही पापी था, जो आज तक देवता न बनकर राक्षस बना रहा। लेकिन आज मेरी आँखें खुल गई हैं। अब मुझे अपनी भूल का अहसास हो रहा है। मैं आज माँ लक्ष्मी के चरणों में बैठकर यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं कभी भी शराब नहीं पिऊँगा, न कभी जुआ खेलूँगा, न ही गंदे और बुरे लोगों की संगत में बैठूँगा। मैं तुम्हें कभी दुःख नहीं दूँगा।

मेरे देवता... मेरे प्राणनाथ, माँ लक्ष्मी की कृपा से आप सुधर गए तो मुझे सारे संसार के खजाने मिल गए। आज मैं कितनी

खुश हूँ... माँ... ने मेरा उजड़ा घर बसा दिया। मेरा सुहाग मुझे मिल गया। अब मैं इक्कीस व्रत पूर्ण करके श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की इक्यावन प्रतियाँ लक्ष्मी भक्तों को बाँटूँगी ताकि उनका भी मेरी ही भाँति कल्याण हो जाए।

गोपाल ने अपनी पत्नी का हाथ पकड़कर उसे चूमते हुए कहा—देखो राधा जिस माँ लक्ष्मी ने मुझे पाप के संसार से निकाल दिया है, मैं भी उनके इक्कीस व्रत रखूँगा। सदा घर में उनकी पूजा करता रहूँगा।

राधा ने अपने पति के चरणों में अपना सिर रखते हुए कहा—मेरे देवता आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ... बहुत ही प्रसन्न। माँ लक्ष्मी की कृपा से मुझे आज नया जीवन मिला।
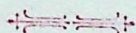
श्री वैभव लक्ष्मी माँ के व्रत के चमत्कार

सेठ माँगेराम कैसे कंगले से सेठ बना

देखा जाए तो यह पूरा संसार लक्ष्मीजी के चारों ओर नृत्य कर रहा है। हर छोटा-बड़ा लक्ष्मी को पाकर धनवान बनने के चक्कर में है। हर प्राणी धनवान बनने के सपने देखता रहता है। ऐसा ही एक प्राणी माँगे राम था। जो छोटा-सा व्यापारी था। थोड़ा बहुत कोई अनाज या तेल खरीदकर स्टाक कर लेता। जब उसका भाव बढ़ जाता तो उसे बेच देता। उससे उसे जो लाभ होता उसी में अपना जीवन व्यतीत करता।

हर बार तो हर काम में लाभ नहीं होता" एक बार माँगे राम ने कुछ ऐसे सामान को खरीदकर गोदाम में भर लिया जिसके विषय में उसे पूर्ण यह विश्वास था कि इस साल के बजट में उन चीजों के दाम अवश्य बढ़ेंगे तो वह इन्हें बेचकर खूब धन कमा लेगा। फिर वह सेठ माँगे राम बन जाएगा।

परन्तु उसने जो सोचा था, सारे काम उसके विपरीत हो गए। उन चीजों का भाव बढ़ने की बजाय कम हो गया जिसके कारण उसे इतना घाटा हो गया कि माँगेराम का सारा धन चला गया" ऐसे समय में इंसान को क्या सूझता, उसके जीवन में न छटने वाले अंधेरे छा गए। वह उदास और निराश घर पर पड़ा रहने लगा।

सारा धंधा चौपट हो गया। चिंता के मारे माँगेराम अंदर ही अंदर सूखने लगा। उसकी पत्नी जब अपने पति की यह हालत देखती तो उसका दिल भी डूबने लगता। एक ओर तो घर में

खाने को कुछ नहीं रहा था। दूसरी ओर कारोबार बंद हो गया। तीसरा उसके पति ने खटिया पकड़ ली। ऐसे में वह क्या करे? कहाँ जाए? इन्हीं चिंताओं में डूबी रामदेवी रात-रात भर सो न सकती। नींद आती ही कहाँ थी।

वह हर रोज़ सुबह उठकर विष्णु भगवानजी के मंदिर जाती। वहाँ पर माँ लक्ष्मी और उनके पति भगवान् विष्णु की जोड़ी के आगे दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हे लक्ष्मी नाथ, हे भगवान् विष्णु मुझ पर भी कृपा करो। हमारा उजड़ रहा घर आप ही बचा सकते हो। मेरे पति ने खाना-पीना भी छोड़ दिया है। इस हालत में वे क्या जीवित रहेंगे। प्रभु आप ही लक्ष्मीजी से कहो कि हम दुखियों पर थोड़ी कृपा कर दें। नहीं तो हम दोनों पति-पत्नी मर जाएँगे...

आपका भक्त दुःखी होकर मरे तो क्या आप सहन कर लेंगे प्रभु?

आप ही बताओ यदि आपको दुःख होगा तो लक्ष्मीजी उसे सहन कर लेंगी?

प्रभु... यदि मेरे पति की मृत्यु हो गई तो मैं भी उसी समय अपनी जान दे दूँगी...इस हत्या का कारण लक्ष्मी तो होंगी जो हम से रूठ गई हैं...यह कहते हुए राम देवी भगवान् विष्णु और लक्ष्मी जी के चरणों में सिर रखकर फूट-फूट कर रोने लगीं...

उसी समय माँ लक्ष्मी की आवाज आयी!

राम देवी, जाओ! अपने घर जाकर मेरे ग्यारह व्रत रखो। परंतु यह ध्यान रखना कि यह व्रत सम्पूर्ण विधिपूर्वक रखे जाएँ। फिर तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हो जाएगी।

रामदेवी...माँ लक्ष्मी की जय जयकार करती हुई मंदिर से

बाहर निकली। उसने अपने पति को जाकर सारी कहानी सुनाई। अपनी पत्नी की बात पर पूर्ण विश्वास करके उसने अपना नया जीवन आरंभ करने की योजना बना ली। अब तो उसे माँ लक्ष्मी का आशीर्वाद मिल गया था। उसने जैसे-तैसे कुछ मित्रों से मिलकर उनकी सहायता से नया माल सस्ते रेटों पर खरीद लिया।

उधर उसकी पत्नी रामदेवी हर शुक्रवार को माँ लक्ष्मी जी का व्रत रखकर शाम को उनकी कथा करके प्रसाद बाँटती। ग्यारहवें व्रत पर उसने ग्यारह कँवारी कन्याओं को खाना खिलाकर सच्चे मन से अपने पति के साथ मिलकर माँ लक्ष्मी की उपासना की। साथ-ही इक्यावन पुस्तकें श्री वैभव लक्ष्मी व्रत की माँ लक्ष्मी के भक्तों को बाँटी।

दूसरे ही दिन.जैसे माँगेराम अपनी दुकान पर गया तो उसका सारा माल दोगुने रेटों पर बिक गया। जिससे माँगे राम को बहुत लाभ हुआ। उसी लाभ से उसने कई प्रकार की चीजें खरीदकर अंदर भर लीं।

देखते ही देखते उसे हर काम में लाभ होने लगा। उसके सारे पुराने घाटे नफे में बदल गए। कुछ ही दिनों में कंगला माँगेराम सेठ माँगेराम बन गया। उसने अपने घर में ही माँ लक्ष्मी जी का मंदिर बना लिया। सुबह-शाम दोनों पति- पत्नी उस मंदिर में बैठकर माँ लक्ष्मी और भगवान् विष्णु की उपासना करते।

रामदेवी माँ लक्ष्मी के इक्कीस व्रत हर वर्ष रखने लगी।
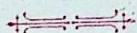
माँ लक्ष्मी की कृपा से संतान पाई

सेठ जयलाल की शादी को दस वर्ष बीत गए थे। इन दस वर्षों में वे एक छोटी-सी दुकान पर अपना धंधा करते-करते बहुत बड़ी कोठी तक पहुँच गए थे। एक साधारण दुकानदार से बड़े व्यापारी बन गए। धन कमाने की भूख तो हर प्राणी को ही होती है। इसलिए जयलाल के विषय में यह बात कहना बेकार है। धन कमाने की लालसा उन्हें बचपन से ही थी।

जय से पहले वे जयलाल बने फिर सेठ जयलाल बने। यह सब चमत्कार लक्ष्मी जी का ही था कि किसी को तो रामू··से रामचन्द्र···और जब अति कृपा होती है तो सेठ रामचन्द्र जी बना देती है, धन्य हो माँ लक्ष्मी···आप तो सदा से धन्य हैं। किसी ने ठीक ही कहा है कि इस माया के तीन नाम—परशू, परशा, परशराम।

सेठ जयलाल जी का जीवन कुछ ऐसा ही था। धन कमाने के लिये वे इतने अंधे हो गए थे कि उन्हें अपनी पत्नी की सूनी गोद का भी ख्याल न आया। क्योंकि उनके सामने तो एक ही मंजिल थी धन कमाना···माँ लक्ष्मी की तिजोरियों में बंद रखना। पत्नी को सोने से तो लाद दिया लेकिन उसका हृदय···उसमें हृदय के अंदर जो ममता सिसकियाँ भर रही थीं उस पीड़ा का जानने का प्रयास कभी न किया। नारी के अंदर भी तो एक नारी होती है। कामुक और भावुक पुरुष उसे समझने का प्रयास नहीं करते।

कृष्णा देवी के हृदय में एक ऐसी ही आशा पिछले दस वर्षों से सिसकियाँ भर रही थी। वैसे तो उनके घर में किसी चीज़ की कमी नहीं रही थी, धन, दौलत, सोना, चाँदी, कारें, कोठी सब कुछ ही था। मगर इन सब चीजों के होते हुए उसका मन बुझा-

बुझा सा रहता था। धीरे-धीरे यह उदासी उसे हार्दिक रोग की ओर ले जाने लगी।

जयलाल जी ने अपनी पत्नी की यह हालत देखी तो उनका मन डूबने लगा। जीवन में उन्हें पहली बार अहसास होने लगा कि उन्होंने सब कुछ पाकर भी सब कुछ खो दिया है। कृष्णा देवी की आँखों से बह रहे आंसू देखकर उनका मन भी डूबने लगा। उन्होंने अपनी पत्नी को छाती से लगाकर कहा।

प्रिये, न रो... न रो... तुम्हारे आंसू मुझसे नहीं देखे जाते। फिर अब तुम्हारे पास किस चीज की कमी है। जो इस तरह से रो रही हो...

प्राणनाथ, हमारे पास सब कुछ होते हुए भी हमारी हालत किसी भिखारी से भी बुरी है। आप इस धन कमाने को ही जीवन समझे बैठे हैं। मगर कभी भूलकर यह भी सोचा है कि यह धन आप किसके लिये इकट्ठा कर रहे हैं?

हमारी मौत के पश्चात् इसका वारिस कौन होगा। यह धन तो सेठ जयलाल का नाम नहीं पुकारेगा।

कोई यह नहीं कहे सौतोले सोना या लाखों करोड़ों रुपये सुपुत्र श्री जयलाल...। यह तो हमारी संतान से ही लिया जाएगा। रामलाल सुपुत्र सेठ जयलाल...यदि हमारे संतान ही नहीं, तो आपकी यह संपत्ति मिट्टी है मिट्टी। यह जिंदगी नहीं...जीने का साधन है...।

फिर मैं एक नारी हूँ! मेरी ममता को इस धन से बहलाया नहीं जा सकता। मुझे तो संतान की जरूरत है...संतान की...। संतान नहीं तो यह सब बेकार है। यह कहते हुए कृष्णा देवी बच्चों की भाँति फूट-फूटकर रोने लगी...।

जयलाल को महसूस हुआ जैसे वह ठोकर खाकर गिर पड़ा हो। उसके मन की आँखें पहली बार खुली थीं। वास्तव में उसने अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल यही की थी कि संसार भर के बारे में सोचता रहा। मगर अपनी पत्नी के बारे में कभी न सोचा। आज पहली बार उसने अपनी पत्नी के हृदय की गहराइयों में झाँककर देखा था।

संतान के बारे में उसने पहले भी बड़े से बड़े डाक्टरों से दवाइयाँ ली थीं। हर प्रकार के चैकअप भी करवाए थे। परंतु हर डॉक्टर ने यही कहा, आप दोनों में कोई कमी नहीं।

बात डॉक्टरों के पास ही खत्म हो गई। इससे आगे उन्होंने कभी नहीं सोचा ''किंतु आज उनकी पत्नी ने उनकी आँखें खोल दी हैं ''परंतु इस दुःख का उपाय क्या है? यही बात उनकी समझ में नहीं आ रही थी।

''कृष्णा!''

''जी!''

तुम क्या समझती हो कि मुझे संतान की जरूरत नहीं। मैंने अच्छे से अच्छे डॉक्टरों से सलाह ली। दवाइयाँ लीं, परंतु फिर भी हम यदि संतान नहीं पा सके तो क्या करें?

आप केवल डॉक्टरों से ही संतान की आशा लगाए बैठे रहे तो कुछ नहीं होगा। उन्हें तो आपसे धन मिल रहा है। वे लम्बे-लम्बे परचे, दवाइयों को लिखकर पकड़ा देते हैं। क्या हुआ उनसे? कुछ नहीं ''कुछ नहीं ''।

''फिर क्या करूँ?''

अभी यह शब्द जयलाल के मुँह में ही थे कि नौकरानी ने आकर बताया, बाहर पंडितजी आए हैं।

जी, वे कह रहे थे, मैं मथुरा, वृंदावन से आया हूँ। इतने वर्षों के पश्चात् उनके पुरोहित जी पधारे हैं, यह सुनकर उन्हें बड़ी खुशी हुई। दोनों पति-पत्नी उठकर उनके सम्मान के लिए गए। चरण छूकर उन्हें उच्च स्थान पर बैठाया।

पंडितजी आप और इतने वर्षों के पश्चात्!

इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं, हम ब्राह्मण सदा संकट के समय ही आते हैं। हम लोभी ब्राह्मण नहीं। हम तो मन के मौजी हैं। हमारे हृदय के तार प्रभु की वीणा पर धड़कते हैं। बोलो बच्चो! आपको क्या कष्ट है, जो रात भर रोते रहे हो?

जी ''जी ''मगर आपको यह कैसे पता चला।

हरी ओम ''हरी ओम ''जय शिव शंकर भोलेनाथ ''हे भगवान विष्णु लक्ष्मी नारायण '' ।

अब यदि मैं आपको यह बता दूँ कि आप संतान न होने के दुःख से पीड़ित हैं तो ''

धन्य हैं महाराज आप! वास्तव में ही आप हमारे वंशक पुरोहित हैं। हे ब्रह्म स्वरूप क्या आप हमारे इस कष्ट को दूर कर सकते हैं?

करने वाले तो स्वयं लक्ष्मी नारायण भगवान विष्णु हैं। उनके आशीर्वाद से आप माँ वैभव लक्ष्मी जी के इक्यावन व्रत रखने का दृढ़ संकल्प लें लें। यह व्रत आपकी पत्नी रखेंगी। जिस दिन अंतिम व्रत संपूर्ण होने लगे उसी दिन माँ लक्ष्मी का यज्ञ कर इक्यावन कँवारी कन्याओं को भोजन करवा दें और साथ ही इक्यावन पुस्तकें श्री वैभव लक्ष्मी व्रत की माँ के भक्तों को बाँट दें। प्रभु आपकी इच्छा पूरी करेंगे और व्रत की पूरी विधि समझाकर पंडित जी प्रस्थान कर गए। सेठ जयलाल व उनकी

धर्मपत्नी कृष्णा ने माँ वैभव लक्ष्मी का व्रत उसी शुक्रवार से करना प्रारम्भ कर दिया।

इस व्रत के पूर्ण होने के नौ मास पश्चात् माँ वैभव लक्ष्मी की कृपा उन पर हुई। कृष्णा देवी एक पुत्र की माँ बनी तो जयलाल पिता बन गए।

जय माँ लक्ष्मी···जय माँ लक्ष्मी।
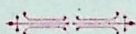
बेकारी दूर हो गई

माँ-बाप का एकमात्र सहारा जुगल था। जिसे पढ़ाने के लिये पिता ने अपनी सारी पूँजी लगा दी। माँ एक-एक दिन गिनती रही कि कब उसका लड़का पढ़ाई पूरी करेगा। कब उसकी नौकरी लगेगी। उसकी नौकरी लगने पर ही तो उन्हें सुख मिलेगा।

परंतु, भाग्य की यह कैसी विडम्बना थी कि एम.ए. की शिक्षा प्रथम श्रेणी में पास करने के पश्चात् बेचारे जुगल को कहीं नौकरी नहीं मिल सकी। वह बेचारा हर रोज़ घर से यही आशा लेकर निकलता कि आज मुझे नौकरी जरूर मिल जाएगी।

परन्तु शाम को वही ढाक के तीन पात। परिणाम वही शून्य, नौकरी कहीं नहीं मिली।

जुगल अपने माँ-बाप के दुःख को समझता था। उसे पता था, घर की गाड़ी चलाने के लिए धन की ज़रूरत है। यह धन तो तभी मिलेगा, जब उसे नौकरी मिल जायेगी··। यही सोचकर वह सुबह से शाम तक धक्के खाता रहता मगर कुछ भी तो नहीं होता था।

एक दिन दुःखी और निराश जुगल भगवान् विष्णु के मंदिर में गया। वहाँ पर बहुत-से लोग आ-जा रहे थे। कोई प्रसाद चढ़ा रहा था। कोई नकद दान दे रहा था। वह अपनी जेब की ओर देखने लगा और ठंडी आह भरकर बोला—

हे प्रभु! हे भगवान विष्णु! मैंने ही कौन सा पाप किया है जो मेरे पास तुम्हारे प्रसाद के भी पैसे नहीं। घर से पैदल चलकर नौकरी की तलाश में घूमना पड़ता है। क्योंकि बस के किराये के भी पैसे जेब में नहीं होते··· इस शहर में लोग क्या-क्या आनंद ले रहे हैं, मौज मस्ती करते हैं और मैं दो समय की रोटी की तलाश में भटक रहा हूँ। उफ मेरे भगवान् दुःख के मारे उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसे रोते देखकर पुजारी जी ने उसे प्यार से कहा—

बेटे, तुम क्यों रो रहे हो? इस भगवान् के मंदिर में रोने का क्या काम?

पुजारी जी! मैं इसलिए रो रहा हूँ कि मैं बेकार हूँ, दुःखी हूँ, मेरे पास भगवान् का प्रसाद चढ़ानें योग्य पैसें नहीं।

बेटे! चिंता करने से कुछ नहीं होता। तुम हर शुक्रवार को श्री वैभव लक्ष्मी जी का व्रत रखकर माँ की उपासना करो। बस तुम्हें माँ के आशीर्वाद से काम मिल जाए।

पुजारी जी ने उसे श्री वैभव लक्ष्मी व्रत की पुस्तक दी। उसी सप्ताह शुक्रवार से जुगल ने माँ वैभव लक्ष्मी का व्रत आरंभ कर दिया। माँ लक्ष्मी ने उस पर तीसरे सप्ताह के व्रत पर कृपा कर दी। उसे सरकारी नौकरी मिल गई।

जुगल ने माँ लक्ष्मी की श्री वैभव लक्ष्मी व्रत की इक्कीस प्रतियाँ भी बाँट दीं। फिर पहले वेतन में से सात कन्याओं और

सात ब्राह्मणों को घर पर खाना खिलाया।

जय माँ वैभव लक्ष्मी!
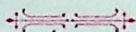
पुराने रोग से मुक्ति मिली

सुरेश बाबू शहर के पुराने रईस लोगों में से थे। बाप-दादा की संपत्ति इतनी अधिक थी कि उन्हें कोई काम करने की जरूरत ही नहीं थी। मकानों, दुकानों के किराए ही इतने आते थे कि उन्होंने कभी भी नहीं सोचा था कि तंगी किसे कहते हैं। दुःख किसे कहते हैं। सुख के झूले झूलने वाले दुःख का अर्थ भी नहीं जानते।

परन्तु, सदा एक जैसे दिन नहीं रहते। समय बदलते देर नहीं लगती, सुख-दुःख में बदल जाए तो इन्सान भी कष्ट भोगने लगता है। यही हाल सुरेश बाबू का था। जब उन्हें पहली बार दिल का दौरा पड़ा था, उनके जीवन की यह पहली ठोकर थी जिसके कारण वे चिंतित हुए। डॉक्टरों को घर पर बुलाया गया, उनका इलाज घर पर ही होने लगा।

लेकिन एक रोग के साथ और कई रोग उन्हें लग गए। खाँसी, बुखार, जोड़ों का दर्द। डॉक्टर लोग अपनी-अपनी समझ से इलाज करने लगे।

मगर मरज़ बढ़ता गया। कोई भी दवाई उन पर असर नहीं कर रही थी। घर वाले बहुत चिंतित हो गए। ऐसे में करें भी तो क्या करें। हमारे देश में सबसे सस्ती चीज सलाह है, जो फ्री में हर एक से मिल जाती है। जितने भी लोग घर में आते सब

अपनी-अपनी हाँककर चले जाते।

कोई कह रहा था, इन पर शनि ग्रह है।

कोई कहने लगा इन पर किसी भूत की छाया पड़ गई है। तांत्रिकों, ज्योतिषियों को बुलाया गया तो परिणाम वही निकला जो पहले था। घर का सारा वातावरण उदासी में डूब गया। विशेष रूप से उनकी पत्नी शीला तो हर समय उदास रहने लगी। एक दिन शीला की माँ उनके घर पर सुरेश बाबू के स्वास्थ्य का पता करने आई तो उसने घर का सारा वातावरण उदासी में डूबा देखकर अपनी बेटी से कहा—

देखो बेटी! यहाँ पर तदवीर काम नहीं करती, वहाँ तकदीर काम कर जाती है। तुम लोग दवाइयाँ दे देकर हार गए हो। कुछ भी तो नहीं हुआ। जब दवाइयों का असर न हो तो दुआओं से काम लेना पड़ता है। बेटी! तुम यदि ग्यारह शुक्रवार के व्रत विधिपूर्वक रखो और श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा का पाठ व्रत रखकर करो तो माँ लक्ष्मी की कृपा से तुम्हारा सुहाग फिर से पहले की भाँति नजर आने लगेगा। यह कहते हुए शीला की माँ ने अपने पास से श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा निकालकर शीला को दे दी।

शीला ने शुक्रवार से माँ लक्ष्मी का व्रत विधिपूर्वक करना आरंभ कर दिया। माँ लक्ष्मी की उपासना वह सुबह-शाम करती रही।

सुरेश बाबू धीरे-धीरे ठीक होने लगे। ग्यारहवें व्रत तक सुरेश बाबू का स्वास्थ्य पहले से भी अच्छा हो गया। व्रत पूर्ण होने पर सुरेश और शीला ने मिलकर एक यज्ञ किया जिसमें सात कन्याओं को सबसे पहले खाना खिलाया गया। माँ वैभव

लक्ष्मी व्रत कथा की प्रतियाँ उन दु:खियों को बाँटी गईं जो सुख शांति की खोज में भटक रहे थे।

जय माँ वैभव लक्ष्मी!
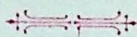
दहेज

सीताराम एक दफ्तर में क्लर्क की नौकरी करते थे। उनके घर में पुत्र न होकर दो पुत्रियाँ ही थीं जिन्हें वे सदा लक्ष्मी रूप ही कहा करते थे। उन दोनों लड़कियों को सीताराम ने खूब पढ़ाया। अच्छी शिक्षा के साथ-साथ ज्ञान भी उनको पूरा-पूरा दिया गया। दोनों लड़कियों की बुद्धि बहुत तेज थी। सुंदर भी इतनी अधिक थीं कि लोग उन्हें चाँद के टुकड़े कहा करते थे।

समय व्यतीत हो रहा था। दोनों बहनें एक जैसी ही लगती थीं। जवानी के द्वार पर पाँव रखते ही सीताराम को उन दोनों पुत्रियों की शादी की चिंता सताने लगी। लड़के देखने जाने लगे। लेकिन जहाँ भी वे लड़का देखने जाते उनसे सबसे पहले यह प्रश्न पूछा जाता,

आप दहेज में क्या दोगे?

देखो भैया, मेरी लड़की सुंदर हैं, गुणवान हैं, रसोई का पूरा काम कर लेती हैं, घर का काम कर लेती हैं, अच्छे वंश में पैदा हुई हैं। इससे अच्छी लड़की आपको कहाँ मिलेगी।

वह बातें तो ठीक हैं, मगर दहेज के बिना शादी कैसे हो सकती है। सीताराम जी, आजकल लोग सबसे बड़ा गुण धन को ही समझते हैं।

ऐसे ही शब्द सीताराम को सब जगहों पर सुनने को मिलते

थे। उनके मन पर इतना बोझ हो गया कि इस दुनिया से ही घृणा होने लगी थी। जिस धन से अधिक उसने शिक्षा और ज्ञान को ऊँचा समझा था वह सब मिट्टी में मिल गया। विद्या का सम्मान लोग नहीं करते। बुद्धि से अधिक धन को मानते हैं। कैसे यह लोग हैं?

यह रोग अंदर ही अंदर सीताराम को खाने लगा। पिता की बिगड़ती हालत देखकर दोनों बेटियों को बहुत चिंता होने लगी। उन्हें यह तो पता था कि इस दुःख का एकमात्र कारण वही हैं। परंतु इससे भी अधिक दुःख उन्हें इस बात का था कि लोग लड़की के गुणों से अधिक धन को ऊँचा समझते हैं। जब बहू को गृहलक्ष्मी का रूप दिया गया है तो इससे बड़ा धन और क्या होगा।

लगता था, सीताराम के घर पर विनाश के बादल छा गए थे। बाप बेटियों के कारण चिंतित था और बेटियाँ बेचारी किसे दोषी करार देतीं। माँ की मृत्यु के पश्चात् तो वे वैसे ही अनाथ-सी हो गई थीं। मन की बात पिता से कहना तो बहुत कठिन था। दोनों पक्ष अंदर ही अंदर सुलग रहे थे। इनके दुःखों को कोई समझने वाला नहीं था।

एक दिन...

उन लड़कियों के मामा-मामी शिमला से उन्हें मिलने आए तो सारे घर को उदासी में डूबा देखकर उन्हें बहुत दुःख हुआ। जब उन्हें कारण का पता चला तो मामी ने उसी समय अपनी भाँजियों को बुलाकर कहा—

देखो बेटियो! अब तुम्हें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि तुम तो स्वयं लक्ष्मी का स्वरूप हो। कुछ पापी लोग

यदि तुम्हारे इस स्वरूप को नहीं पहचान सके तो इसमें दिल छोटा करने की कौन सी बात है। तुम तो साक्षात लक्ष्मी हो। जब भी कोई प्राणी संकट में फँसता है, उसे इसका उपाय करना चाहिए बिना उपाय के कष्ट नहीं टल सकते।

''मामी जी, हमें वे उपाय भी तो बता दो, हम तो अपने पिता के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हैं।

बेटी उपाय बहुत साधारण हैं। देखो मैं तुम्हें यह छोटी सी पुस्तक उपहार स्वरूप दे रही हूँ। बस इसे पढ़ो और माँ लक्ष्मी के व्रत आरंभ कर दो।

श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की यह पुस्तक हमारी उस पड़ोसन ने माँ लक्ष्मीजी के इक्कीस व्रत सम्पूर्ण होने पर इक्कीस लोगों को उपहार स्वरूप बाँटी थी। उसकी भी पुत्री की शादी केवल दहेज के कारण रुकी हुई थी। उसने इस पुस्तक को पढ़कर विधिपूर्वक माँ के इक्कीस व्रत हर शुक्रवार को पूरे किए। अंत में माँ लक्ष्मी उन पर प्रसन्न हुईं। उनकी पुत्री की शादी बहुत अच्छे लड़के से बिना दहेज के ही हो गई। इस खुशी में हमारी यह पड़ोसन हर इक्कीस सप्ताह के पश्चात् श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की इक्कीस प्रतियाँ इसलिए मुफ्त बाँटती हैं, ताकि माँ लक्ष्मी उन पर कृपा करती रहें और साथ ही जो भी इस पुस्तक को पढ़े उसका भी कल्याण हो।

दोनों बहनों ने अपनी मामी से यह पुस्तक ले ली और शुक्रवार से ही लक्ष्मी जी व्रत विधिपूर्वक शुरू कर दिये।

इक्कीस व्रत पूरे होने पर उन्होंने सात कँवारी कन्याओं को भोजन खिलाया और इक्कीस प्रतियाँ श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की लोगों को अपने हाथों से बाँटकर साथ में लक्ष्मी जी

का प्रसाद दिया। इसके एक सप्ताह के पश्चात् ही सीतारामजी के पुराने दोस्त गोपीचन्द मिले। वे अब अमेरिका में रहते थे। उनके भारत आने का एकमात्र कारण यही था कि अपने दोनों लड़कों की शादी किसी भारतीय लड़की से ही करना।

गोपीचन्द की बात सुनकर सीताराम बोले, भाई गोपीचंद! यदि बुरा न मानों तो एक बात कहूँ ?

सीताराम! तुम मेरे पुराने दोस्त हो, मैं तुम्हें अपने भाई से भी ऊपर मानता हूँ। कहो, क्या कहना चाहते हो ?

गोपीचंद, है तो छोटा मुँह और बड़ी बात वाली बात ही, परंतु कहे बिना रह नहीं सकता।

कहो यार जो कहना चाहते हो।

गोपीचंद, तुम्हारे दो लड़के हैं और मेरी दो लड़कियाँ। अगर तुम्हें मंजूर हो तो…

वाह…वाह…जब घर में गंगा बहती हो तो बाहर धक्के खाने की क्या जरूरत है। मैं तो तुम्हारी लड़कियों को शादी के बाद अमेरिका ले जाऊँगा। अरे तेरी लड़कियाँ नहीं, असल में ये मेरी लड़कियाँ हो गईं…

सीताराम के सारे संकट दूर हो गए।

दोनों बहनों को जब यह पता चला तो वे माँ लक्ष्मी जी की उपासना में लग गईं।

जय माँ वैभव लक्ष्मी!
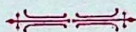
श्री लक्ष्मी महिमा

श्री वैभव लक्ष्मी व्रत में आरती करने के बाद यह श्लोक का पठन करने से शीघ्र फल मिलता है।

यत्राभ्यागतदानमान चरण प्रक्षालनं भोजनं।
सत्सेवा पितृदेवार्चन विधिः सत्यंगवां पालनम्॥
धान्या नामपि संग्रहो न कलहश्चित्ता तृरूपा प्रिया।
दृष्टा प्रहा हरि वसामि कमला तस्मिन गृहे निष्फला॥

भावार्थ

जहाँ मेहमान की आव-भगत करने में आती है उनको भोजन कराया जाता है, जहाँ सज्जनों की सेवा की जाती है, जहाँ निरंतर भाव से भगवान की पूजा और अन्य धर्मकार्य किये जाते हैं, जहाँ सत्य का पालन किया जाता है, जहाँ गलत कार्य नहीं होते, जहाँ गायों की रक्षा होती है, जहाँ दान देने के लिए धान्य का संग्रह किया जाता है, जहाँ क्लेश नहीं होता, जहाँ पत्नी संतोषी और विनयी होती है, ऐसी जगह पर मैं सदा निश्चल रहती हूँ। इनके सिवा की जगह पर कभी कभार दृष्टि डालती हूँ।
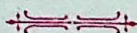
लक्ष्मी चालीसा

॥ दोहा ॥

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस॥

॥ सोरठा ॥

यही मोर अरदास,
हाथ जोड़ विनती करूँ।
सबविधि करौ सुवास,
जयजननि जगदंबिका॥

सिन्धु सुता मैं सुमिरों तोही,
ज्ञान बुद्धि विद्या दे मोही।
तुम समान नहीं कोई उपकारी,
सब विधि पुरवहु आस हमारी।
जै जै जै जननी जगदम्बा,
सबकी तुम ही हो अवलम्बा।
तुम हो सब घट घट के वासी,
विनती यही हमारी खासी।
जग जननी जै सिन्धुकुमारी,
दीनन की तुम हो हितकारी।
बिनवो नित्य तुमहिं महारानी,
कृपा करो जग जननि भवानी।
केहि विधि स्तुति करौं तिहारी,
सुधि लीजै अपराध बिसारी।

कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी,
जग जननी विनती सुन मोरी।
ज्ञान बुद्धि सब सुख की दाता,
संकट हरो हमारी माता।
क्षीर सिन्धु जब विष्णुमथायो,
चौदह रत्न सिन्धु में पायो।
चौदह रत्न में तुम सुख रासी,
सेवा कियो प्रभु बनदासी।
जो जो जन्म प्रभु जहां लीना,
रूप बदल तहं सेवा कीन्हा।
स्वयं विष्णु जब नरतनु धारा,
लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा।
तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं,
सेवा कियो हृदय पुलकाहीं।
अपनायो तोहि अन्तर्यामी,
विश्व विदित त्रिभुवन के स्वामी।
तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनि,
कहंलौ महिमा कहौं बखानी।
मन क्रम वचन करै सेवकाई,
मन इच्छित वांछित फल पाई।
तजि छल कपट और चतुराई,
पूजहिं विविध भाँति मनलाई।
और हाल मैं कहौं बुझाई,
जो यह पाठ करै मन लाई।

ताको कोई कष्ट न होई,
मन इच्छित वांछित फल पाई।
त्राहि त्राहि जय दुख निवारिणी,
तापभव बंधन हारिणी।
जो यह पढ़े और पढ़ावे,
ध्यान लगाकर सुनै सुनावै।
ताको कोई रोग न सतावे,
पुत्रादि धन सम्पति पावै।
पुत्रहीन अरु संपतिहीना,
अन्धवधिर कोढी अति दीना।
विप्र बोलाय के पाठ करावे,
शंकादिल में कभी न लावै।
पाठ करावै दिन चालीसा,
तापर कृपा करें गौरीशा।
सुख सम्पति बहुत सी पावै,
कमी नहीं काहु की आवै।
प्रतिदिन पाठ करै सो पूजा,
तेहिसम धन्य और नहिं दूजा।
प्रतिदिन पाठ करै मनमाही,
उन सम कोई जग में कहुं नाहीं।
बहुविधि क्या मैं करौं बड़ाई,
लेय परीक्षा ध्यान लगाई।
करि विश्वास करै व्रत नेमा,
होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा।

जै जै जै लक्ष्मी भवानी,

सब में व्यापित हो गुणखानी।

तुम्हारो तेज प्रबल जग मोहा,

तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहि।

भूल चूक करि क्षमा हमारी,

दर्शन दीजै दशा निहारी।

बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी,

तुमहि अछत दुख सहते भारी।

नहिं मोहि ज्ञान बुद्धि है मन में,

सब जानत हो अपने मन में।

रूप चतुर्भुज करके धारण,

कष्ट मोर अब करहु निवारण।

केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई,

ज्ञान बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई।

॥ दोहा ॥

त्राहि त्राहि दुख हारिणी, हरो बेगि सब त्रास।
जयतिजयतिजय लक्ष्मी, करो दुश्मन का नाश॥
रामदास धनि ध्याननित, विनय करत्त कर जोर।
मातु लक्ष्मी दास पै, करहु दया की कोर॥

श्री महालक्ष्मी की स्तुति

महादेवी महालक्ष्मी नमस्ते त्वं विष्णु प्रिये।
शक्तिदायी महालक्ष्मी नमस्ते दुःख भंजनि ॥ 1 ॥

श्रेया प्राप्ति निमित्ताय महालक्ष्मी नमाम्यहम।
पतितोद्धारीणि देवी नमाम्यहं पुनः पुनः ॥ 2 ॥

वेदांस्त्वा संस्तुवन्ति ही शास्त्राणि च मुहुर्मुः।
देवास्त्वां प्रणमन्तिही लक्ष्मीदेवी नमोऽस्तुते ॥ 3 ॥

नमस्ते महालक्ष्मी नमस्ते भवभंजनी।
भक्तिमुक्ति न लभ्यते महादेवी त्वयि कृपा विना ॥ 4 ॥

सुख सौभाग्यं न प्राप्नोति पत्र लक्ष्मी न विधते।
न तत्फलं समाप्नोति महालक्ष्मी नमाम्यहम ॥ 5 ॥

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहिमे परमं सुखम्।
नमस्ते आद्यशक्ति त्वं नमस्ते भीड़भंजन ॥ 6 ॥

विधेही देवी कल्याणं विधेहि परमां श्रियम।
विधावन्तं यशवन्तं लक्ष्मवन्तं जनं कुरु ॥ 7 ॥

अचिन्त्य रूप-चरिते सर्वशत्रु विनाशीनी।
नमस्तेतु महामाया सर्व सुख प्रदायिनी ॥ 8 ॥

नमाम्यहं महालक्ष्मी नमाम्यहम सुरेश्वरी।
नमाम्यहं जगद्धात्री नमाम्यहं परमेश्वरी ॥ 9 ॥

आरती श्री लक्ष्मी जी की

जय लक्ष्मी माता, जय जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत हरविष्णु विधाता।
ब्रह्माणी रुद्राणी कमला तू ही जगमाता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता॥ जय॰
दुर्गा रूप निरंजन सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि सिद्धि पाता।
तू ही है पाताल बंसती, तू ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशक जग निधि के त्राता।
जिस घर थारो वासा ताहि में गुण आता।
कर सके सोई करले मन नहीं भड़काता॥ जय॰
तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न कोई पाता।
खान पान की वैभव तुम बिन नहीं आता॥ जय॰
शुभ गुण सुन्दर मुक्ता क्षीर निधि जाता।
रत्न चतुर्दिश तोकू कोई नहीं पाता॥ जय॰
श्री लक्ष्मीजी की आरती जो कोई गाता।
उर उमंग अति उपजे पाप उतर जाता॥ जय॰
स्थिर चर जगत रचाये शुभ कर्म नर लाता।
राम प्रताप मैया की शुभ दृष्टि चाहता॥ जय॰

॥ श्री श्री यन्त्रम ॥

॥ श्री श्री ललिता महा त्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्म्यै महा यन्त्रम ॥

॥ ध्यानम् ॥

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य मौलि स्फुरत्तारा नायक शेखरां स्मितमुखी मापीन वक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं सौम्यां रत्न घटस्थ रक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥

सप्रेम भेंट

श्री ....

भेंटकर्ता ....

....